हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part III

विषय - सूर का वात्सल्य वर्णन -

भक्तिकाल की सगुण भ
कृष्णाश्रयी शाखा में सूरदास अग्रगण्य
बाल-वर्णन हिन्दी-साहित्य में सर्वाधिक म
जाता है। सूरदास को कोमल हृदय और
मिले थे। उनकी कोमलता और भावुकता
प्रमाण हमें उनके वात्सल्य वर्णन में मि
उनका वात्सल्य वर्णन कई रूपों में दि
सर्वप्रथम तो बाल-स्वरूप, बाल प्रकृ
हृदय की कोमलता आदि के वर्णन में
ी सफलता पायी है।

सूरदास के वात्सल्य के आ
- कृष्ण शिशु रूप में पालने में सो

Appointments

8.00 शिशु कृष्ण की मोहक छवि और माता
9.00 हार्दिक आह्लाद को उन्होंने पालने के
दिखाया है :—

10.00 यशोदा हरि पालने झुलावै
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ.
सो नन्द भामिनी पावै ॥

जैसे-जैसे कृष्ण बड़े होते हैं, व
उनमें बाल-प्रवृत्तियाँ जागती हैं। माता यश
को अपनी उँगली थाम कर आँगन में च
सिखाती है। इतना ही नहीं कृष्ण अन्य सा
की तरह माटी खाते हैं, घुटुरुन चलते हैं
भी मटकाते हैं। सूरदास के वात्सल्य की
इसमें दिखायी पड़ती है कि कृष्ण उनके
होकर भी सामान्य बने हुए हैं। कृष्ण
lay सुन्दरता का वर्णन करते समय सूरदा
ात्मकता उपस्थित की है, उसमें स
सौंदर्य दिखाई पड़ता है। जैसे —

बाल-सुलभ प्रवृत्तियों के वर्णन में सूरदास को बड़ी सफलता मिली है। सूरदास ने बाल-प्रवृत्तियों का ऐसा निरीक्षण किया है कि बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता भी दाँतों तले उंगली दबाने लगते हैं। स्वाभाविक है कि खेल में बच्चे एक-दूसरे को चिढ़ाते हैं। बच्चे इसकी शि[कायत] अपनी माँ से करते हैं। कृष्ण में भी यह प्रवृत्ति है जब बलराम उन्हें चिढ़ाते हैं तो इसकी शिकायत मा[ता के] सामने दर्ज हो जाती है —

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसो कहत मोल को लीनो, तोहि जसुमति कब [...]

इसके ~~[illegible]~~ जवाब में माता-यशोदा की यह[...] पूर्ण उक्ति कितना सजीव है —

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत को ही [...]
सूर स्याम मो गोधन की सौं हौं माता [...]

इसी तरह बच्चों में झूठ बोलना, चो[...]
[...]ह करना, ईर्ष्या करना आदि बाल प्रवृत्तियाँ [...]
[...]न बाल-प्रवृत्तियों के सूक्ष्म निरीक्षण [...]
[...] कवियों को [...]

पीछे छोड़ दिया है।" मैया मोरी चन्द्र खिलौना लैहों" में हठ की प्रवृत्ति का वर्णन हुआ है तो "मैया मोरी मैं नहि माखन खायो" पद में रूठ का सजीव वर्णन हुआ है।

वात्सल्य वर्णन के अन्तर्गत सूरदास ने यशोदा के हृदय पुलक का जो वर्णन किया है, उसमें विश्वव्यापि माता-पुत्र के दुलार और लाड़-प्यार की झलक मिलती है कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद यशोदा में वात्सल्य विरह का भाव जागता है। ऐसी हालत में नन्द और यशोदा के बीच आपसी नोक-झोंक होता है जिसमें वात्सल्य की मार्मिकता मिलती है। यशोदा मथुरा जानेवाले राहगीर से कहती है कि तुम मेरा संदेशा देवकी से कहना। मैं कृष्ण की 'धाय-माँ' थी लेकिन मातृत्व का भाव मुझ में है।

अतः हम कह सकते हैं कि सूरदास का वात्सल्य उस ऊँचाई तक पहुँच गया है जहाँ तक किसी कवि की कलम आज तक नहीं पहुँची। सरलता सर्वत्र स्वाभाविकता के कारण सूर का वात्सल्य को छू जाता है। बाल सौंदर्य के एलबम अनेक तस्वीरें सजायी हैं, जिसमें मातृहृदय उमड़